'पत्र' संपादक के नाम

नाम के अनुरूप अमृत बरसाने वाली पत्रिका ज्ञानामृत का सितम्बर महीने का अंक मिला। सभी लेख व कविताएँ दिल को छू देने वाले लगे। लेख ' फिर वैसा होगा जैसा यह था' में बाबा किस तरह संकट में रक्षा करते हैं, इसे दर्शाया गया है। शिव बाबा जगतगुरु हैं, हम सभी उनके शिष्य हैं। अगर हम शिव बाबा की श्रीमत का पालन करेंगे तो सुधर जायेंगे।

– ब्रह्माकुमारी सरोज,
बैरिया (बलिया), उ.प्र.

जुलाई, 2013 में सम्पादकीय 'गुप्त दान महाकल्याण' में कौन-से दान का कितना पुण्य मिलता है, बहुत अच्छी तरह से समझाया गया है। इसी अंक में दादी जी के दिए उत्तरों से पुरुषार्थ में हिम्मत और उत्साह बढ़ता है। 'पीछा करता है कर्म फल' लेख में लिखा है, 'जैसे बछड़ा अपनी माता को ढूंढ़कर उसी के पास जाता है, उसी तरह पूर्व जन्मों में किया हुआ पाप अथवा पुण्य, कर्त्ता को ढूंढ़ लेता है', यह बात समाज को जगाने के लिए काफी है।

– ब्रह्माकुमार ज्ञानेश्वर,
बुरहानपुर (म.प्र)

अक्तूबर, 2013 अंक में 'कर्मगति के ज्ञान द्वारा व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति' लेख पढ़कर बहुत शान्ति मिली है क्योंकि इसमें कई प्वाइन्ट शान्तिदायी हैं जैसे कि कोई देने, कोई लेने आता है। इस बात पर बहुत विचार करने के उपरान्त यह पाया कि नहीं भाग सकता कोई कर्मों से। कर्म के ज्ञान से आती है सहनशीलता। कर्म का ज्ञान होने से मानव का जीवन बहुत सरल हो जाता है। मैंने जब से इस लेख को पढ़ा है तब से मुझे बहुत सन्तोष मिला है और बहुत अच्छा लगा है।

– उमा बहन, कानपुर

अक्तूबर, 2013 अंक में सम्पादकीय 'वृद्धावस्था की तैयारी' मन को छूने वाला था। इसमें बहुत अच्छे और सरल ढंग से समझाया गया है कि जैसे वृद्धावस्था के लिये हम बैंक में धन जमा करते हैं, उसी प्रकार, वृद्धावस्था की तैयारी जवानी से ही शुरू कर देनी चाहिए। उजाला रहते अर्थात् शरीर में बल रहते ईश्वरीय ज्ञान धारण कर लेना चाहिए।

– लालजीभाई गोवेकर,
मेहकर, बुलडाणा (महाराष्ट्र)

सितम्बर, 2013 अंक में प्रकाशित 'राजनीतिज्ञों का सम्मान क्यों?' में लिखा है, निचला वर्ग उच्च वर्ग का अनुसरण करता है। ज्ञान तो सम्पूर्ण मानव जाति के लिये ईश्वरीय वरदान है बिना भेदभाव के। राजनीति और अध्यात्म का मेल सोने में सुहागे जैसा है। सूर्य की धूप और हवा की तरह ज्ञान सब के लिए उपलब्ध है। इन सब महान शब्दों से भरा लेख बहुत प्रभावशाली है। कई लोगों ने हमसे ऐसे प्रश्न पूछे हैं कि राजनीतिज्ञों का सम्मान क्यों? लेख की जेरोक्स कापी निकाल बांटने जैसी हैं।

– ब्रह्माकुमार सी.एन.मोहिते,
हुबली (कर्नाटक)

ज्ञान का अमृत मिलता नित ही,
'ज्ञानामृत' ले आता,
परम सत्य की, परम तत्व की,
महिमा जो बतलाता।
परमपिता, परमेश्वर की जो,
यश-गाथा को गाता,
सचमुच में 'ज्ञानामृत' प्रियवर,
मुझको बहुत ही भाता।
पुत्र बनें हम पिता के सच्चे,
'ज्ञानामृत' सिखलाता,
सच्चाई और अच्छाई के
नव गीतों को गाता।

– प्रो.शरद नारायण खरे,
मंडला (म.प्र)

ज्ञानामृत के सर्व पाठको को नव वर्ष की कोटि कोटि शुभ बधाइयाँ